रामप्यारी का रिसाला

—लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

राजस्थान मरहठों की लूट और हमलों से परेशान था। मेवाड़ मरहठों से तो दुःखी था ही पर गृह-कलह से उसकी बर्बादी और भी बढ़ती जा रही थी। चूंडावतों और शक्तावतों का आपसी वैमनस्य उस समय अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था।

अपने पुत्र हमीरसिंहजी और भीमसिंहजी को बहुत ही कम उमर में छोड़कर महाराणा अड़सीजी स्वर्गवासी हो गये। ऐसी विषम स्थिति में मेवाड़ राज्य की जिम्मेवारी नाबालिग महाराणा की माता झालीजी सरदार कुंअर पर आ गई। वे बाईजीराज की गादी पर आसीन थी। मेवाड़ राज्य के अन्तःपुर का प्रबन्ध, शासन, परम्परा से चले आते दस्तूर और सांस्कृतिक रीति-रस्म की देखभाल करने वाली महिला बाइजीराज कहलाती थी। राज्य परिवार की योग्य एवं बुजुर्ग महिला को इस पद पर प्रतिष्ठित किया जाता था। इस पद के भार व व्यय के लिये अतिरिक्त खर्च राज्य से उन्हें मिलता था। राज्य सम्बन्धी कोई सलाह भी बाईजीराज को देने का अधिकार होता था। पर्दे में रहते हुये भी स्त्रियों द्वारा राज्य का काम सम्भालने की प्रथा मेवाड़ के राजघराने में शुरू से ही रही है। पुत्र की नाबालिग अवस्था में माता से पूछ कर काम किया जाता था। खास-खास व्यक्तियों से खास-खास काम की बात करने के लिये बीच में पर्दा टांग कर बात कर ली जाती थी। साधारण काम-काज के लिये जनानी ड्योढ़ी पर सरदार, प्रधान आदि आते और डावड़ी (दासी) के साथ उत्तर-प्रत्युत्तर कहला दिया जाता। बाईजीराज सरदारकुंअर की दासी बड़ी चतुर थी। वह उत्तर-प्रत्युत्तर का काम बड़ी खूबी से करती थी। काम-काज करते-करते वह इतनी होशियार हो गई थी कि राज्य की नीति और काम-काज में दखल रखने लगी। रामप्यारीबाई की सलाह बाईजीराज झालीजी मानने लगी। उसका अपना अलग रूतबा जम गया। रामप्यारीबाई का बाकायदा हुकम चलता था। वह लोगों को छुड़वा देती और गिरफ्तार तक करवा लेती। प्रधान पद पर आरूढ़ अमरचन्द्र सनाढय जैसे योग्य और विशिष्ट व्यक्ति को पकड़ने के लिये उसने अपने आदमी भेज दिये और घर लुटवा दिया। यहाँ तक कि एक पूरा रिसाला रामप्यारीबाई के अधीन था जो उसके हुकम पर चलता था। वह रामप्यारी का रिसाला कहलाता था। उसके मर जाने के बाद भी लगभग १०० वर्ष तक रामप्यारी का रिसाला ही कहलाता था। आधुनिक ढंग से फौजों को तरतीब दी गई, तब वह उनमें मिलाया गया। उसका मकान रामप्यारी की बाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। कर्नल टाड शुरू में आये तब उनके रहने के लिये रामप्यारी की बाड़ी में ही प्रबन्ध किया गया। बाद में उस मकान में सरकारी तोपखाना और मैगजिन रहे। अब उसका कुछ अंश बोहेड्डा की हवेली कहलाता है।

तत्कालीन राजनीति में रामप्यारी एक प्रमुख पात्र थी। उस समय गृह-कलह और मरहठों के उपद्रवों से मेवाड़ की दशा शोचनीय थी। खजाने में पैसा नहीं था और वेतन न मिलने के कारण सिन्धी फौजों ने आकर महलों पर धरना दे दिया।[1] चारों ओर चिन्ता छा गई।

[1] अड़सीजी के समय में मेवाड़ी सरदारों के खिलाफ हो जाने से उन्हें बाहर से सेना का प्रबन्ध करना पड़ा। उसी समय सिन्धी, अरबी एवं विलायती फौजों का गठन किया गया। तब से मेवाड़ में सिन्धी, अरबी और बलौच आदि बाहर से आकर बसे हुये हैं। मेवाड़ में सोलह उमरावों के अलावा १७वां उमराव सिन्धी मुसलमान है। इस १७वें उमराव की स्थापना महाराणा अड़सीजी ने ही की थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराणा अड़सीजी ने जो बाहर से सिन्धियों की बड़ी फौज बुलाकर रखी थी, वह सम्भल नहीं रही थी। उसका खर्च निभाना मेवाड़ राज्य की शक्ति के बाहर की बात थी। सिन्धी सिपाही महलों पर धरना दिये बैठे थे। सरदार प्रधान लोग समझा रहे थे परन्तु सिन्धी मानते न थे। रामप्यारी उत्तर-प्रत्युत्तर करती दिन में जनाने से बाहर ड्योढ़ी तक पचासों चक्कर लगाती। चालीस दिन तक धरना तथा समझाना-बुझाना चलता रहा। अन्त में बाईजीराज ने कुरावड़ु के रावतअर्जुनसिंह जी चूंडावत को बुलाया। उनके समझाने पर सिन्धी माने, पर इस शर्त के साथ जब तक रुपयों का प्रबन्ध हो, हमारी ओल में किसी को रखा जाय। 'ओल' का अर्थ होता था कि विशिष्ट व्यक्ति को उनके सुपुर्द कर दिया जावे। रामप्यारी ने आकर बाईजीराज से सिन्धियों की शर्त कही। बाईजीराज झालाजी विचार में पड़ गई। ओल में किसी को रखे बिना कोई चारा नहीं। परन्तु किस व्यक्ति को रखा जाय? उस समय उनके पास ही उनके ६ साल के छोटे पुत्र भीमसिंह जी बैठे थे। वे एकदम बोल उठे—'मुझे ओल में भेज दो।' इतना सुनते ही बाइजीराज का स्नेह उमड़ा और नेत्र दुःख के आँसुओं से गीले हो गये। उन्होंने प्यार से बेटे को छाती से लगा लिया। रामप्यारी ने भीमसिंहजी को गोदी में उठाकर सिन्धियों को सौंप दिया। अर्जुनसिहजी भी साथ हो गये। दो वर्ष तक सिन्धियों ने भीमसिंहजी तथा अर्जुनसिंहजी को अपनी ओल में रखा।

भीमसिंहजी के ओल में से लौटने के थोड़े दिन बाद महाराणा हमीर सिंहजी का कम उम्र में देहान्त हो गया। भीमसिंहजी मेवाड़ की गद्दी के उत्तराधिकारी थे। पर बाईजीराज इन्हें गद्दी पर बैठाने से इन्कार कर गई। बाईजीराज ने कहा, मुझे राज्य नहीं चाहिये। मैं अपने बेटे की कुशलता में ही खुश हूँ। इस राज्य के लिये मेरे पति मारे गये। खिलती जवानी में मेरा लड़का षड्यन्त्रों का शिकार हुआ, दुष्टों ने उसे जहर दिया। मुझे राज्य से नफरत हो गयी है। राज्य के लालच में इन्सान में इन्सानियत नहीं रहती। वहाँ रात-दिन षड़यन्त्र, कुचक्र और धोखे-बाजी के सिवाय कुछ नहीं। मैंने राज्य की स्वामिनी बनकर दुःख, क्लेश और चिन्ताएँ ही देखी हैं। मैं तो चाहती हूँ कि मेरा बेटा इन प्रपंचों से दूर ही रहे। राजा बनने की अपेक्षा एक साधारण मनुष्य ज्यादा सुखी रहता है। लोगों ने जनानी ड्योढ़ी पर जाकर अर्ज करवाई—'आप ऐसा करके तो अपने इकलौते बेटे के जीवन को और ज्यादा खतरे में डालेंगी। गद्दी पर बैठने वाला गद्दी के उत्तराधिकारी का जीवित रहना कैसे पसन्द करेगा?'

भीमसिंहजी साढ़े नौ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे। राज्य की शासन डोर चूंडावतों के हाथ में थी। शक्तावतों और चूंडावतों का आपस का द्वेष था ही। शक्तावतों के नेता भींडर के रावत मोहकम सिंहजी रुष्ट होकर भींडर जा बैठे थे। राज्य का कार्य अर्जुन सिंह चूंडावत की सलाह से मुसाहिब लोग चला रहे थे।

बाईजीराज की आज्ञा से रामप्यारी ने जाकर मुसाहिबों से कहा, 'महाराणा साहिब की जन्मगांठ आई है। उसे मनाने के लिये खर्च का प्रबन्ध करो।' परन्तु मुसाहिबों ने मना कर दिया कि रुपये नहीं हैं और प्रबन्ध नहीं हो सकती। मुसाहिबों का ऐसा उत्तर सुनकर रामप्यारी बोली, 'रुपयों का प्रबन्ध तुम्हें करना पड़ेगा। यदि प्रबन्ध नहीं कर सकते तो मुसाहिबी क्यों करते हो?' इस पर किसी ने कहा, 'हम तो नहीं कर सकते, तू कर ले।' रामप्यारी बड़ी जबानदराज थी और बाईजीराज उसको मानती थी। वह बोली 'तुम्हारे भरोसे मुसाहिबी नहीं पड़ी है। यहाँ राज्य में काम करने वालों की कमी नहीं है। तुम चूंडावतों की ताकत पर भूल रहे हो। जाकर कह देना रावत अर्जुन सिंह जी को कि वर्षगांठ मनाई जाएगी और रुपयों का प्रबन्ध करना पड़ेगा। अगर उनसे नहीं होता है तो काम छोड़ दें।'

जनानी ड्योढ़ी पर एक अहलकार सोमचन्द गान्धी नामक व्यक्ति रहता था। उसने समय को आँका और रामप्यारी से कहने लगा, 'अर्जुन सिंहजी को बाईजीराज बड़ा योग्य समझती हैं। अगर मुझे प्रधानगी सौंपे तो मैं सारा प्रबन्ध कर दिखाऊँ।'

बाईजीराज चिढ़ी हुई तो थी ही, रामप्यारी ने उन्हें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्टा-सीधा कहकर राजी कर लिया। उसी समय सोमचन्द गाँधी को प्रधान पद दे दिया गया। सोमचन्द तत्काल चूंडावतों के विरोधियों के पास गया और तुरन्त रुपयों का प्रबन्ध कर बाईजीराज को रुपये नजर कर दिये। सोमचन्द ने बड़ी नीतिज्ञता से काम लिया। चूंडावतों के विरोधियों को अपनी ओर मिलाकर अपना दल मजबूत कर लिया। कोटा के जालिमसिंहजी झाला को उसने अपना मद्दगार बना लिया। महाराणा को लेकर सोमचन्द गान्धी भींडर गया और मोहकम सिंहजी शत्कावत को मनाया। वे बीस वर्ष से नाराज हो रहे थे। महाराणा के अपने यहाँ आने से वे तुरन्त साथ हो गये। उदयपुर लाकर मोहकम सिंहजी को शासन की डोर सौंप दी गई। अब चूंडावतों के स्थान पर शत्कावतों का हुकम चलने लगा। सोमचन्द गान्धी और रामप्यारी की सलाह से सारा काम होने लगा। शत्कावतों के हाथ में शासन शक्ति देने से चूंडावत नाराज होकर अपने-अपने ठिकानों को चले गये। शत्कावत चूंडावतों को हानि पहुँचाने की सोचते और चूंडावत शत्कावतों को।

सोमचन्द गान्धी ने काम बड़ी खूबी से सम्हाला। सोमचन्द और मोहकम सिंहजी ने मिलकर सोचा कि मेवाड़ के कई इलाके मरहठों ने दबा रखे हैं। यह मेवाड़ के लिये सम्मान और अर्थ दोनों ही प्रकार से हानिकारक हैं। इन इलाकों को हमें वापिस लेना चाहिये।

महाराणा और बाईजीराज ने भी इसे स्वीकार किया। तलवार के बल के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं था। उन्होंने मरहठों को राजस्थान से बाहर निकालने की योजना बनाई। दूसरी रियासतों से भी इस सम्बन्ध में बातचीत की। मरहठों से गये हुये इलाकों को छीनने के लिये कोटा और जोधपुर भी सहमत हो गये। कोटा से फौज लेकर आने को तो जालिमसिंहजी तैयार थे। जोधपुर के प्रधान ज्ञानमल ने सोमचन्द गान्धी के नाम जोधपुर की आतुरता विशेष पत्र लिखकर प्रकट की।

योजना पूरी तरह से तैयार थी। एक ही जगह आकर सोमचन्द गान्धी रूक रहा था। चूंडावत नाराज होकर अपने ठिकानों पर चले गये थे। जब तक चूंडावतों को सम्मिलित नहीं किया जाय तब तक आगे कदम बढ़ाना मुमकिन नहीं था। सोमचन्द के कई बार प्रयास करने पर भी चूंडावत राजी नहीं हो रहे थे। सलाह हो रही थी कि उन्हें कैसे मनाया जाय। रामप्यारी ने कहा, 'मुझे इजाजत दी जाय। मैं जाकर उन्हें मनाती हूँ। मुझे विश्वास है कि आपके चरणों में उन्हें लाकर रहूँगी।' रामप्यारी अपना रिसाला सजाकर चूंडावतों के पाटवी सलूम्बर के रावत भीमसिंहजी के पास आई। यहाँ पर रामप्यारी ने अपनी कार्य-कुशलता का पूरा परिचय दिया। उसने चूंडावतों की पीढ़ियों तक की गई पूर्व सेवाओं का उल्लेख किया। उसने मेवाड़ की दुर्दशा का करुणाजनक विवरण दिया। फिर मरहठों को निकाल बाहर करने पर देश की खुशहाली का चित्र सामने रखा। उसने कहा, 'इस समय की सेवाएँ चूंडावतों की कीर्त्ति को इतिहास में अमिट रखेंगी।' फिर आपस की गलतफहमियों को दूर किया। उसने बाईजीराज की ओर से उनकी दिलजमई की आगे के वादे किये। येन-केन-प्रकारेण रामप्यारी भीमसिंहजी को अपने साथ उदयपुर ले ही आई। उनके साथ ही आमेर, हमीरगढ़, भदेसर, कुरावड़ आदि के चूंडावत सरदार भी अपनी जमीतों को लेकर आए। इन्होंने उदयपुर आकर कृष्णविलास में डेरा डाल दिया। इधर भींडर के मोहकमसिंहजी शत्कावत भी कोटा जाकर वहाँ की पाँच हजार सेना लेकर उसी दिन आ गये। इनका डेरा चम्पाबाग में हुआ।

कई लोग ऐसे थे जो स्वार्थों के कारण यह एकीकरण होने देना नहीं चाहते थे। उन्होंने चूंडावतों के डेरे पर जाकर कहा, 'आप लोगों को फँसाने का यह जाल मात्र है। शत्कावत कोटा से इसीलिये जाकर फौज लाए हैं। धोखा देकर आप लोगों को मारा जावेगा।' इसके साथ कई प्रमाण भी दिये गये। यह सुनकर चूंडावत आपे से बाहर हो गये और रवाना होने का नक्काड़ा बजा दिया। जांगड लोग जोश दिलाने के दोहे बोलने लगे :

धन जां रे चूंडा धणी, भूपत भुजां मेवाड़।
करता आंटो जो करे, बड़का हंदी वाड़।

चूंडावत उदयपुर से चल पड़े। ज्योंही यह खबर सोमचन्द गान्धी को मिली, वह दौड़ा हुआ रामप्यारी को लेकर बाईजीराज के यहाँ पहुँचा और अर्ज की कि किये

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कराये पर पानी फिरता है। वे स्वयं पधार कर चूंडावतों को मना लावें। माँ बेटों को अगर मना कर लाती है तो कोई नई बात नहीं।

बाईजीराज झालीजी उसी समय पलांणा गाँव पहुँची। चूंडावतों से जाकर रामप्यारी ने इस प्रकार कहा, 'आपके पीछे-पीछे आप लोगों की माँ आई हैं। कभी माँ नाराज होती है तो बेटा माफी मांग लेता है। कभी बेटा नाराज होता है तो माँ मना लेती है। अब आपकी माँ आई है। आप लोग उनके पास चलें और माँ-बेटे मिलकर घर की बात करें।' रामप्यारी से ऐसा सुनकर चूंडावत सरदार बाईजीराज के पास उसी समय चले आये।

रामप्यारी ने कहा, 'आप लोग दूसरों की बातों में क्यों आते हैं? यह गंगाजली लेकर एक दूसरे के मन का वहम निकाल लें।' इसके बाद बाईजीराज ने गंगाजली और श्रीनाथजी की तस्वीर सिर पर रखकर सौगन्ध खाई कि उनके साथ किसी प्रकार धोखा नहीं होगा। इसी प्रकार चूंडावत सरदारों ने भी गंगाजली उठाकर स्वामी-भक्त बने रहने की शपथ खाई।

शीघ्र ही मेवाड़ी सैनिकों ने जावर और नींबाहेड़ा के इलाकों से मरहठों को निकाल कर आक्रमण की तैयारी की। अहिल्याबाई ने अपनी सेना भेजी। सिन्धिया की सेना भी मार्ग में इससे मिल गई। मन्दसोर से शिवा नाना भी इनके साथ हो गये।

हड़क्याखाल पर मरहठों की सम्मिलित सेना के साथ मुकाबला हुआ। बरछों और तलवारों से बड़ी जोरदार लड़ाई हुई। मेवाड़ी सेना के कई वीर मारे गये। देलवाड़ा के राजराणा कल्याणसिंहजी झाला बड़ी वीरता से लड़े। उनका सारा शरीर घावों से भर गया। उस समय की उनकी वीरता के कई दोहे प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक दोहा इस प्रकार है :

कल्ला हमल्ला थां किया, पोह उगन्ते सूर।
चढत हड़क्या खाल पै, नरां चढायो नूर॥

लिखने योग्य विशेष बात यह है कि असल में प्रतिभा और योग्यता पर किसी जाति या वर्ग विशेष का ठेका नहीं होता है। रामप्यारी एक साधारण दासी ही थी परन्तु उस समय उसने मेवाड़ की बिगड़ती हुई स्थिति को बड़ी बुद्धिमत्ता एवं चतुराई से सम्भाला। मेवाड़ के इतिहास के अन्य महत्वपूर्ण नामों के साथ-साथ रामप्यारी और उसके रिसाले का नाम भी अमर रहेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org